संदेश 358

दिल्ली , 4 फरवरी 2019

दिव्य देव गणेश के अद्‌भुत प्रतीक

लाहिड़ी महाशय की वंश परम्परा से सम्बन्धित क्रियावान गणेशजी के उस गहन प्रतीकात्मक अर्थ से परिचित हैं जिसमें एक चूहा उनके चरणों के पास बैठा होता है। हमलोग जानते हैं कि एक भयभीत एवं आक्रामक चूहा जो चित्तवृत्तिजन्य विचारों का प्रतीक है, सदा हमारे मस्तिष्क में दौड़ता रहता है और हमें हमेशा उत्तेजना एवं गड़बड़ी में फंसाए रखता है। यहाँ गणेशजी का सुझाव है कि इस चूहे को एक सेवक के रूप में पैर के पास रखा जा सकता है, क्योंकि यह हमारे दैनिक तकनीकी एवं व्यावहारिक कार्यों के सम्पादन हेतु उपयोगी है। जब ऐसा होता है तब सिर में एक शांत, गंभीर एवं अत्यंत मज़बूत हाथी होता है जो जीवन के आयाम में "जो है" के प्रति समझदारी की गहन ऊर्जा का प्रतीक है, न कि "ऐसा होना चाहिए" रूपी मन के अनुमानों में ऊर्जा के क्षय का; जिसके कारण जीवन में समस्त प्रकार के कष्ट, ताप एवं संताप का जन्म होता है। इसके अतिरिक्त कुछ और प्रतीकों का अर्थ निम्न प्रकार से हो झसकता है:-

१. उनके सिर के ऊपर सुशोभित छोटा सा मुकुट तथाकथित राजाओं का क्षुद्र गर्व या प्रभुत्व का प्रतीक नहीं है, अपितु यह तो शुद्ध समझदारी की ऊर्जा का महान एवं सुन्दर प्रतीक है।

२. चौड़ा ललाट अपरिमेय प्रज्ञा तथा विवेक की झलक है।

३. अर्ध उन्मीलित दो आंखें ऐसी अन्तर्मुखी ध्यान-दृष्टि है जिसमें "जो है" पर सजगता सदा बनी रहती है और विक्षेप नहीं होता। इस प्रकार, "जो होना चाहिए" वाली चित्तवृत्ति के जाल से मुक्त रहना सम्भव हो जाता है।

४. ललाट पर दो नेत्रों के बीच अर्थात् कूटस्थ में एक छोटा सा पिंड , जाग्रत प्रज्ञाचक्षु को ही दर्शा रहा है।

५. अत्यंत छोटा मुँह केवल प्रयोजनानुसार एवं संक्षेप में ही बोलने का सुझाव है।

६. सूप की तरह दो बड़े- बड़े कान ध्यानपूर्वक एवं संपूर्णता में सुनने की कला का प्रतीक है।

७. हृदय की ओर मुड़ा हुआ एक लंबा सूँड़ इस बात का सुझाव देता है कि हमलोगों को हृदय के प्रेम एवं जीवन को उपलब्ध होना चाहिए न कि मन की धूर्ततापूर्ण चालाकियों एवं बदमाशियाे ं में रहना चाहिए।

८. एक हाथ में "अमृत कलश" (अमरता का अमृत) उत्साह एवं ऊर्जा से युक्त दीर्घ जीवन का प्रतीक है।

९. एक दन्त पवित्र कार्य करने हेतु एकनिष्ठ भक्ति का प्रतीक है जैसा कि ऋषि व्यास द्वारा बोले जाने पर महाभारत लिखा गया था।

१०. दूसरे हाथ में "अंकुश" मन को स्वाभाविक रूप से नियंत्रण में रखने का सूचक है ताकि वह यदा कदा हठी और अहंकारी न हो सके।

११. मोदक अर्थात् लड्डू भारत का एक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय मिठाई है जो भगवत्ता की मधुरतम कृपाजन्य मोक्ष का प्रतीक है। यह तप अर्थात् क्रिया अभ्यास की स्वाभाविक परिणति है जिससे मन के सुख की इच्छा से मुक्ति हो जाती है और आनंदमय अस्तित्व उपलब्ध हो जाता है। सुख और दुख मनरूपी सिक्के के ही दो पक्ष हैं। आनंद मन से संबंधित नहीं है और इसीलिए वह परस्पर विपरीतों के गलियारे से बाहर है। इस अवस्था में व्यक्ति सर्वज्ञता एवं सर्वव्यापकता की अवस्था में होता है। ऐसे भी लड्डू बहुत पौष्टिक होता है और उसे सात्विक भोजन माना जाता है।

१२. लंबोदर अर्थात् एक लंबा पेट अच्छी जठराग्नि एवं सात्विक भोजन के आनंद लेने का प्रतीक है और इस तरह यह पूर्ण एवं स्वस्थ जीवन को उपलब्ध होने का भी प्रतीक है।

१३. नाभि के नीचे साँप का होना, निर्मन अर्थात् भयभीत मन से मुक्ति और जीवन रूपी पुष्प के प्रस्फुटन की ऊर्जा एवं पवित्रता का प्रतीक है।

१४. यज्ञोपवीत (पवित्र धागा) जीवन की तूरीय अवस्था अर्थात गुणातीत अवस्था का प्रतीक है जो कि मन के तामसिक, राजसिक और सात्विक गुणों से परे है।

जय गणेश ! जय गणेश !! जय गणेश देव !!!